तारकेश्वरी 'सुधि'

गीत

क्रूरताएँ बढ़ रहीं अब, सुप्त हैं संवेदनाएँ।

जिस दिशा जाती नजर ये,
लोग सब टूटे हुए से।
है थके-से तन सभी मन,
स्वप्न बाकी अनछुए से।
उम्र से पहले हुई हैं, वृद्ध सारी कामनाएँ।

बोझ बस्तों का उठाकर,
खो गया बचपन कहीं पर।
कैद की नन्ही हँसी भी ,
खेल गलियों से हटाकर।
बंद कमरों में सिमटकर, रह गई सब कल्पनाएँ।

अब हताशा में युवा भी,
नौकरी लेकिन कहाँ पर?
सब्जबागों की बदौलत,
घिस रहे चप्पल यहाँ पर।
जो बने रक्षक वही अब, दे रहे हैं यातनाएँ।

धीमे-धीमे रूह भिगोता,
इन साँसों में घुलता प्यार।

हृदय कुलाँचें भरता ऐसे,
जैसे वन की हिरणियाँ।
आशाएँ भी पंख लगाकर,
उड़ती जैसे तितलियाँ।
भँवरा बन गुँजन करता मन,
वीणा-सुर -सा लगता प्यार।

श्वाँस थिरकती, लफ्ज़ लरज़ते,
नयनों में बेचैनियाँ।
केशों में अल्हड़ता देखी,
क़दमों में मदहोशियाँ।
तन में कम्पन,मन में हलचल,
पुरवाई-सा बहता प्यार।

झोंकें-पवन उड़ाकर आँचल,
मुस्काते हैं दूर से ।
स्वप्न सुनहरे इन नयनों में,
बहते मन्द बयार से।
मन्द फुहारों -सा गिरकर इस,
मन में रोज महकता प्यार।